खण्ड—A / SECTION—A

1. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग *150* शब्दों में संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

Write short answers to the following in about *150* words each : 10×5=50

(a) अरस्तू द्रव्य पर आकार की तथा सम्भाव्यता पर यथार्थता की वरीयता के लिए किस प्रकार युक्ति प्रस्तुत करते हैं? समालोचनात्मक विवेचना प्रस्तुत कीजिए।

How does Aristotle argue for the priority of Form over Matter and Actuality over Potentiality? Critically discuss.

(b) लाइब्नीज़ की चिदणु की अवधारणा उनके नियतिवाद तथा स्वतन्त्रता सम्बन्धित विचारों को किस प्रकार प्रभावित करती है? अपनी टिप्पणी के साथ विवेचना कीजिए।

How does Leibniz's conception of monads bear upon his views on determinism and freedom? Discuss with your own comments.

(c) हुसर्ल के अनुसार मनोविज्ञानवाद में क्या समस्या है? हुसर्ल अपनी संवृत्तिशास्त्रीय विधि में मनोविज्ञानवाद सम्बन्धित समस्याओं का क्या निवारण प्रस्तुत करते हैं?

What, according to Husserl, is wrong with psychologism? How does Husserl address the problems with psychologism in his phenomenological method?

(d) हेगेल के निरपेक्ष प्रत्ययवाद के आलोक में व्यावहारिक जगत् की सत्यता का परीक्षण कीजिए।

Examine the reality of the phenomenal world in the light of Hegel's Absolute Idealism.

(e) "अतिमानव की आत्मा शुभ है।"

तार्किक प्रत्यक्षवाद के आलोक में उपर्युक्त कथन का समीक्षात्मक परीक्षण कीजिए।

"The Soul of Superman is Good."

Critically examine the above statement in the light of logical positivism.

2. (a) "मैं स्वयं को किसी भी समय प्रत्यक्ष से रहित नहीं पाता हूँ तथा न ही मैं प्रत्यक्ष के अतिरिक्त किसी का अवलोकन कर पाता हूँ।" ह्यूम का यह कथन किस प्रकार वैयक्तिक तादात्म्य की दार्शनिक अवधारणा का समस्यायीकरण करता है? कान्ट अपने 'क्रिटीक ऑफ प्यूर रीज़न' में इस समस्या का किस प्रकार अन्वेषण करते हैं?

"I never can catch myself at any time without perception, and never can observe anything but the perception." How does this statement by Hume problematize the philosophical notion of personal identity? How does Kant deal with this problem in his *Critique of Pure Reason*? 20

(b) मूर के निम्नलिखित कथन की समालोचनात्मक विवेचना कीजिए :

"यदि कोई व्यक्ति हमें कहे कि यह कहना कि 'नीला विद्यमान है' यह कहने के समतुल्य है कि 'नीला तथा चेतना दोनों विद्यमान हैं', तो वह व्यक्ति त्रुटि तथा एक आत्म-व्याघाती त्रुटि करता है।"

Critically discuss the following statement by Moore :

"If anyone tells us that to say 'Blue exists' is the same thing as to say that 'Both blue and consciousness exist', he makes a mistake and a self-contradictory mistake." 15

(c) "मेरा अपनी अवधारणा को तार्किक परमाणुवाद की संज्ञा देने का कारण यह है कि विश्लेषण द्वारा प्राप्त अंतिम अवशेष के रूप में जिन परमाणुओं पर हम पहुँचते हैं, वे तार्किक परमाणु हैं न कि भौतिक परमाणु।"
उपर्युक्त कथन के आलोक में रसल के अनुसार परमाण्विक तथ्यों के स्वरूप पर एक टिप्पणी लिखिए।

"The reason that I call my doctrine logical atomism is because the atoms that I wish to arrive at as the sort of last residue in analysis are logical atoms and not physical atoms."
Write a note on the nature of atomic facts according to Russell in the light of the above statement. 15

3\. (a) 'एकल व्यक्ति' की समस्या के सन्दर्भ में "आत्मनिष्ठता ही सत्य है" के कथन से कीर्केगार्ड का क्या तात्पर्य है?

What does Kierkegaard mean by saying "Subjectivity is the truth" in the context of the problem of 'the single individual'? 20

(b) स्ट्रॉसन के मौलिक विशेष सिद्धान्त के सन्दर्भ में वस्तुनिष्ठ चिन्तन में देश-कालिक चिन्तन की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।

Evaluate the role of spatio-temporal thinking in objective thinking with reference to Strawson's theory of basic particulars. 15

(c) कान्ट के अनुसार विशुद्ध तर्कबुद्धि कब विप्रतिषेध के क्षेत्र में प्रवेश कर जाती है? क्या कान्ट की विशुद्ध तर्कबुद्धि की विप्रतिषेध की अवधारणा उनके द्वारा प्रतिपादित व्यवहार सत् तथा परमार्थ सत् के भेद की प्राकृतिक परिणति है? अपने उत्तर के पक्ष में युक्ति प्रस्तुत कीजिए।

When does Pure Reason enter into the realm of Antinomies according to Kant? Is Kant's notion of Antinomies of Pure Reason a natural culmination of his distinction between Phenomena and Noumena? Give reasons in favour of your answer. 15

4\. (a) "हम जिस रूप में निर्मित हो गये हैं हम उसमें से सदैव कुछ और का निर्माण कर सकते हैं।" सार्त्र के इस कथन की उनके अस्तित्ववाद से सम्बन्धित विचारों के सन्दर्भ में समालोचनात्मक विवेचना कीजिए।

"You can always make something out of what you have been made into." Critically discuss this statement by Sartre with reference to his views on existentialism. 20

(b) "ईश्वरीय स्वरूप की अनिवार्यता से अनन्त वस्तुओं का अनन्त प्रकार से प्रतिफलन होना अवश्यम्भावी है।" स्पिनोज़ा के इस कथन की कुछ सम्भावित आलोचनाओं सहित व्याख्या कीजिए।

"From the necessity of the divine nature there must follow infinitely many things in infinitely many ways." Explain this statement by Spinoza along with some possible criticisms. 15

(c) "किन्तु क्या हम एक ऐसी भाषा की भी कल्पना कर सकते है जिसमें कोई व्यक्ति अपने अन्दरूनी अनुभवों—अपने भावों, मनोदशाओं आदि—का लिखित अथवा मौखिक सम्प्रेषण अपने निजी प्रयोग के लिए कर सके?" विटगेन्स्टाइन के द्वारा इस प्रश्न के दिए गए उत्तर की समालोचनात्मक विवेचना कीजिए।

"But could we also imagine a language in which a person could write down or give vocal expression to his inner experiences—his feelings, moods and the rest—for his private use?" Critically discuss the answer offered by Wittgenstein to this question. 15

खण्ड—B / SECTION—B

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग *150* शब्दों में संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

Write short answers to the following in about *150* words each : 10×5=50

(a) जैन दर्शन के अनुसार कर्म की अवधारणा का परीक्षण कीजिए। उनके मोक्ष की अवधारणा पर इसका कैसे प्रभाव पड़ता है?

Examine the concept of Karma according to Jainism. How does it bear upon their conception of Liberation?

(b) सम्प्रज्ञात समाधि एवं असम्प्रज्ञात समाधि के भेद की व्याख्या कीजिए।

Explain the difference between Samprajñāta Samādhi and Asamprajñāta Samādhi.

(c) मीमांसा के अनुसार स्मृति, प्रमा क्यों नहीं है?

Why is memory not a valid knowledge according to Mīmāṁsā?

(d) द्वैत वेदान्त में पञ्चविध भेद के महत्त्व को दर्शाइए।

Point out the significance of the five-fold differences in the Dualistic School of Vedānta.

(e) निम्बार्क के अनुसार अचित् के स्वरूप एवं प्रकारों की विवेचना कीजिए।

Discuss the nature and types of matter according to Nimbārka.

6. (a) बौद्ध दर्शन में क्षणिकवाद की अवधारणा किस प्रकार से प्रतीत्यसमुत्पाद की अवधारणा का तार्किक प्रतिफलन है? व्याख्या कीजिए।

How is Kṣaṇikavāda a logical derivative of Pratītyasamutpāda in Buddhism? Explain. 20

(b) चार्वाकों द्वारा आकाश के, सत् के अवयव के रूप में, खण्डन का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए तथा उनकी आत्मा के पुनर्जन्म की आलोचना का परीक्षण कीजिए।

Critically evaluate Cārvākas' rejection of Ākāśa as one of the elements of reality and examine their criticism of transmigration of Soul. 15

VVR-IAS BEST INSTITUTE FOR PHILOSOPHY(OPT.)

(c) असत्कार्यवाद के सन्दर्भ में 'अन्यथासिद्ध' एवं 'अनन्यथासिद्ध' की अवधारणाओं की व्याख्या कीजिए।

Explain the concepts of 'Anyathāsiddha' and 'Ananyathāsiddha' in the context of Asatkāryavāda. 15

7. (a) "एक आम का वृक्ष आम के बीज से विकसित होता है।" सांख्य दर्शन अपने कारणता सिद्धान्त के अनुसार इस प्रक्रिया की, अपने विरोधी मतों को अस्वीकार करते हुए, किस प्रकार व्याख्या करेगा?

"A mango tree is grown out of a mango seed." How will Sāṁkhya system explain this process through their theory of causation by rejecting their rival perspectives? 20

(b) बौद्ध दर्शन किस प्रकार आत्मन् की पंचस्कन्धों के रूप में व्याख्या करता है? यदि आत्मा नहीं है, तो बौद्ध दर्शन में मोक्ष क्या है?

How does Buddhism explain Self in terms of Pañcaskandhas? What is Liberation for Buddhism if there is no Soul? 15

(c) चार्वाक तथा जैन दर्शन की सत् की अवधारणा के बीच अन्तर की व्याख्या कीजिए।

Explain the differences of conception of Reality between Cārvāka and Jainism. 15

8. (a) एक सम्भावना एवं अपरिहार्यता के रूप में 'दिव्य जीवन' से अरविन्द का क्या तात्पर्य है?

What does Aurobindo mean by 'life divine' as a possibility and inevitability? 20

(b) वैशेषिक दर्शन के सन्दर्भ में विशेष की तार्किक एवं तत्त्वमीमांसीय स्थिति का समीक्षात्मक मूल्यांकन कीजिए।

Critically evaluate the logical and metaphysical status of Viśeṣa in the context of Vaiśeṣika Philosophy. 15

(c) अद्वैतवाद के अनुसार जीव एवं जीव-साक्षी के स्वरूप एवं सम्बन्ध की विवेचना कीजिए।

Discuss the nature and relationship of Jīva and Jīva-sākṣī according to non-dualism. 15

★ ★ ★